जब घर ही ठीक नहीं तो सजावट कहां से होगी ?

—शोभना नारायण
(प्रसिद्ध कथक नृत्यांगना)

ख्यातिप्राप्त कथक नृत्यांगना शोभना नारायण पटना की रहने वाली हैं । 'पद्मश्री' से अलंकृत और 'कथक' को समर्पित शोभना नृत्य के तीनों अंगों—नृत्त, नृत्य और नाट्य को बड़ी कुशलता से अभिव्यक्त करती हैं । अपनी प्रस्तुति को पूर्णतम बनाना ही उनकी सबसे बड़ी प्रसन्नता है ।

अपने प्रदेश से गहरे रूप से जुड़ी शोभनाजी कला-संगीत के क्षेत्र में बिहार में हुए परिवर्तन को संगीत के भाषा की शैली में समझाते हुए कहती हैं, बिहार में लय भी है, ताल भी है, सुर भी है, अभिनय भी है और अभिव्यक्ति भी । पर इन सारे बिंदुओं को जोड़ने वाली कड़ी कहीं खो गई है जो एक सही अनुपात में सुखद अनुभूति दे सके । उनका मानना है किबिहार के सांस्कृतिक गौरव का इतिहास पुराना है । भले आम्रपाली वैशाली की नगरवधू रही हो पर वह एक कुशल नर्तकी भी थी । बिहार हस्तकला एवं शिल्पकला में भी आगे रहा । यहां की 'मिथिला चित्रकला' ने देश-विदेश में अपनी पहचान छोड़ी है । मगध और मौर्य वंश के लिए ही नहीं बल्कि जैन और बौद्ध धर्म की जन्मस्थली भी रही है । पर आज के दौर में यह प्रदेश अपने अतीत की परछांई हो गया है ।

सांस्कृतिक माहौल में बदलाव को और स्पष्ट करते हुए कहती हैं, बिहार में दुर्गापूजा, दशहरा और सरस्वती पूजा के अवसर पर आयोजित कार्यक्रमों में शास्त्रीय संगीत के कलाकारों की संख्या पहले के अनुपात में घटी है । पर दूसरी तरफ पाटलीपुत्र, वैशाली जैसे 'पर्यटन त्योहार' का राजकीय संरक्षण में आयोजन शास्त्रीय संगीत के कलाकारों को आकर्षित कर रहा है । ऐसे 'पर्यटन त्योहार' राष्ट्रीय स्तर पर 'खजुराहो महोत्सव' जैसे आयोजनों के समकक्ष पहचान नहीं बना पाए हैं ।

राष्ट्रीय स्तर पर नृत्य-गायन-वादन के क्षेत्र में बिहार क्यों नहीं अपनी पहचान नहीं बना पा रहा है ? इस सवाल को जड़ से कुदेरती हुई शोभनाजी कहती हैं, कलाकार के सही सांचे का बनना उसकी आर्थिक स्थिति, पारिवारिक परिस्थितियां और सांस्कृतिक वातावरण पर निर्भर करता हैं । मसलन सौ कलाकार नृत्य सीखते हैं पर प्रौढ़ता आते आते स्टेज पर एक ही कलाकार आ पाता है । रोजी-रोटी की समस्या से ग्रसित व्यक्ति कलाकार बनते-बनते रह जाता है । बिहार के मिथिला क्षेत्र में पारिवारिक स्तर पर लोग अभी भी संगीत और कला के प्रति संवेदनशील हैं ।

व्यक्तिगत स्तर पर शोभनाजी 'कथक' के प्रचार-प्रसार के लिए बहुत कुछ कर रही हैं । घर पर विदेशी कलाकारों को भी प्रशिक्षण देती हैं । 'स्पीक मैके' और 'इंडियन इंस्टीच्युशनल रुरल कल्चरल सेंटर' से जुड़कर भी कार्यक्रम देती रहती हैं । 'स्पीक मैके' और 'रूरल कल्चरल सेंटर' का तुलनात्मक विश्लेषण करते हुए वह बताती हैं कि पहला 'अभिजात्य स्कूलों, कालेजों' तक ही सीमित है जबकि दूसरा ग्रामीण इलाकों में प्रभाव-क्षेत्र बना रहा है । वह स्वीकार करती हैं कि ऐसे प्रयासों से छोटे-छोटे स्कूली बच्चों में शास्त्रीय संगीत के प्रति मानसिक रुझान हुआ है । स्कूलों में कार्यक्रमों को देने जाने पर जब छोटे बच्चे उन्हें एक दीर्घायु आयोजक की तरह स्वागत करते हुए स्टेज तक ले जाते हैं और एक तल्लीन श्रोता/दर्शक की तरह सुनते और देखते हैं, तो लगता है आनेवाली पीढ़ी शास्त्रीय संगीत को आगे ले जाने में समर्थ होगी ।

पटना के भारतीय नृत्य कला मंदिर, कालिदास रंगशाला, प्रेमचंद रंगशाला, कला संगम, बिहार आर्ट थियेटर और संगीत नाटक अकादमी के प्रयासों का जिक्र करते हुए शोभनाजी प्रदेश में कला-संगीत के भविष्य के प्रति आशान्वित हैं ।

शास्त्रीय संगीत, लोक संगीत, हस्त कला और शिल्प कला को आगे बढ़ाने के लिए राज्य सरकार को कुछ संस्थान बना कर मेधावी बच्चों में सम्भावना देखते हुए वजीफा देकर सार्थक प्रयास करना चाहिए । हालांकि बिहार सरकार से उन्हें 'बिहार गौरव सम्मान' भी मिला है । पर शोभनाजी स्थापित कलाकारों को 'पेंशन' जैसी सुविधा दी जाने की पक्षधर हैं । कलाकारों के लिए 'स्वास्थ्य-बीमा' जैसा प्रावधान नहीं रहने के कारण गले में मामूली खराबी, अंगुली में गड़बड़ी या पैर में चोट लगने के कारण बड़े-से-बड़े कलाकर भी प्रस्तुति के शिखर पर पहुंचते-पहुंचते रह जाते हैं

प्रस्तुति—मृणाल कान्त पाण्डेय

बिहारी एक गाली है

—रामदेव झा
(मैथिली साहित्यकार)

मैथिली कृति 'परिझैत पाथर' के लिए १९९१ का साहित्य अकादमी सम्मान हासिल करने वाले उत्कृष्ट साहित्यकार श्री रामदेव झा ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय दरभंगा में मैथिली के प्रोफेसर हैं । १९५७ से ५९ तक श्री झा अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद के संयुक्त सचिव भी रहे हैं । 'एक खीरा : तीन फांक' नामक कृति से अपनी साहित्यिक पहचान बनाने के बाद अब तक आपकी बीस अन्य कृतियां प्रकाशित हो चुकी हैं । अकादमी पुरस्कृत 'परिझैत पाथर' सात नाटकों का संकलन है । प्रस्तुत है अकादमी पुरस्कार समारोह के अवसर पर उनसे हुई बातचीत के अंश—

मैथिली किसी विशेष पौराणिक या शास्त्रीय भाषा की उत्पत्ति है या स्थान या रहन-सहन की बोलियों के मिश्रण स्वरूप अनेकों भाषाओं का विकसित क्षेत्रीय रूप ?

मैथिली पूर्णतः विकसित स्वतंत्र भाषा है । जिसकी अपनी शब्दावली, अपना व्याकरण है । हर स्वतंत्र भाषा का अपना इतिहास होता है, मगर उसकी पौराणिकता में जाया जाए तो धार्मिक, सामाजिक तथा क्षेत्रीय संस्कारों से अनेकों रूपों में जुड़ती-बिगड़ती बनती मिलेगी जिसका सही आंकलन कठिन है ।

क्षेत्र, रहन-सहन तथा सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टिकोण से भाषा बहुधा पिछड़े हुए निम्न मध्यवर्गीय लोगों की भाषा मात्र बन जाती है, क्या यह सच नहीं ?

उत्तर में हिमालय की तराई व नेपाल तक, दक्षिण में गंगा की सीमा तक का क्षेत्र मिथिला कहलाता है । इस क्षेत्र की लगभग शतप्रतिशत भाषा मैथिली है । इतने बड़े और विकसित क्षेत्र में हर प्रकार के लोग रहते हैं ।

कोई भी भाषा किसी विशेष वर्ण, जाति या सम्प्रदाय से जुड़ कर कभी नहीं रही । अन्य प्रदेशों के मुकाबले मिथिला क्षेत्र की अपना अटूट संस्कार है, जिसे हर मिथिलावासी प्रेम करता है ।

रचनात्मकता के आधार पर मैथिली साहित्य की कौन सी विद्या इसका नेतृत्व करती है, तथा कथ्य के आधार पर उसका स्वरूप क्या है ?

मैथिली का गीत (पदावली), मैथिली साहित्य की जान है । ये पदावलियां अपने आम सामाजिक परिवेश के अत्यन्त निकट है । परन्तु इनमें भावनात्मक एवं श्रृंगार रस का वर्चस्व है । विद्यापति के गीत मैथिली के रचनात्मक आधार हैं । राष्ट्रीय भाषाओं के अन्य बड़े-बड़े साहित्यकारों ने उनकी पदावलियों को आधार बना कर बहुत कुछ रचा और अपनी पहचान बनाई । मैथिली का 'महाकाव्य' किसी भी अन्य भाषा के समक्ष भारी है ।

धर्म, राजनीति और समाज इन तीनों के बीच का एक ही सेतु है 'भाषा' । मैथिली का इस दृष्टिकोण से मिथिला समाज, धर्म और राजनीति को क्या योगदान है ?

साहित्य कभी किसी उद्देश्य से नहीं लिखा जाता । अतः उसे धर्म, राजनीति तथा समाज में बांटना उचित नहीं । इसके लिए 'प्रोपेगण्डा साहित्य' का अपना अलग स्वरूप है । साहित्य का उद्देश्य मनुष्य की मूल भावनाओं से जुड़ा है । इस रूप में मैथिली एक पूर्ण भाषा है । जिसमें धर्म, संस्कार तथा नीति एक जगह समाहित हैं ।

बिहारी तथा मैथिली में क्या अन्तर है ?

बिहारी एक गढ़ा हुआ प्रचलित शब्द है जिसका कोई अर्थ नहीं । बिहारी नाम की न तो कोई भाषा है न कल्चर । ये एक खोखला आडम्बर है ।

वर्तमान का भारतीय समाज 'बिहारी' शब्द को गाली का प्रतीक मानता है, और बिहार से जुड़ी चीजों को पिछड़ेपन का प्रतीक, ऐसा क्यों ?

आप ठीक कहते हैं मुझे भी अक्सर इस बात का अहसास हुआ है । बिहारी एक गाली है । मगर जब-जब मैंने स्वयं को 'मिथिलावासी' कहा मुझे मान-सम्मान मिला है । जैसा कि मैंने कहा 'बिहारी' मात्र एक गढ़ा हुआ शब्द, एक खोखली संस्कृति है जिसे कुछ लोगों ने थोप दिया है और कुछ लोगों ने ओढ़ लिया है । जिस क्षेत्र और जिन लोगों को हम बिहारी के नाम से जानते हैं या जोड़ते हैं वो वास्तव में संस्कृति और संस्कारहीन लोग हैं । जिनका 'धर्म-कर्म-मर्म' से कोई लेना देना नहीं । कुछ गुलामी कर रहे हैं कुछ करवा रहे हैं । ये लोग स्वयं को मैथिली से अलग मानते हैं, मिथिला को तुच्छ समझते हैं और स्वयं को उ. प्र. से जोड़ते हैं । मगर जब-जब मैंने स्वयं को 'मिथिलावासी' कहा मुझे मान-सम्मान मिला है । जैसा कि मैंने कहा 'बिहारी' मात्र एक गढ़ा हुआ शब्द, एक खोखली संस्कृति है जिसे कुछ लोगों ने थोप दिया है और कुछ लोगों ने ओढ़ लिया है । जिस क्षेत्र और जिन लोगों को हम बिहारी के नाम से जानते हैं या जोड़ते हैं वो वास्तव में संस्कृति और संस्कारहीन लोग हैं ।

एक प्रबुद्ध साहित्यकार से पहले एक आम बिहारी नागरिक होते हुए प्रदेश की वर्तमान राजनैतिक तथा सामाजिक स्थिति पर आपकी टिप्पणी ?

जातिवाद एवं सांप्रदायिकता की गुण्डा राजनीति का प्रतीक है बिहार । गुण्डा राज्य गुण्डों को पाल रहा है तथा निम्न वर्गीय समाज प्रतिदिन निम्नतर होता जा रहा है । कुल मिला कर बन्दूक और कुल्हाड़े की भाषा का चहुंमुखी विकास हो रहा है । तथा बारूद के ढेर पर बैठा एक ठूंठ समाज विकसित हो रहा है ।

प्रस्तुति : राजा जाफरी

दि हिन्दुस्तान टाइम्स लि. की ओर से राजेंद्र प्रसाद द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस, हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ में मुद्रित एवं प्रकाशित

डायमंड पाकेट बुक्स

की नवीनतम कृतियाँ

हास्य कविता सीरीज

1991 की श्रेष्ठ हास्य व्यंग्य रचनाएँ	15.00
1990 की श्रेष्ठ हास्य व्यंग्य रचनाएँ	12.00
1989 की श्रेष्ठ हास्य व्यंग्य रचनाएँ	10.00
1988 की श्रेष्ठ हास्य व्यंग्य रचनाएँ	6.00
1986 की श्रेष्ठ हास्य व्यंग्य रचनाएँ	6.00
1985 की श्रेष्ठ हास्य व्यंग्य रचनाएँ	6.00
1984 की श्रेष्ठ हास्य व्यंग्य रचनाएँ	6.00
फक्कड़ की फुलझड़ियां	5.00
पटाखे ही पटाखे	6.00

काका हाथरसी

काका काकी के लव लेटर्स	12.00
काका के प्रहसन	12.00
काका तरंग	12.00
काका के चुटकुले	8.00
काका की महफिल	12.00
हंसी के गुब्बारे	10.00
काका की फुलझड़ियां	12.00
काका की चौपाल	6.00
काका काकी की नोंक झोंक	12.00
मीठी-मीठी हसाइयां	12.00
काका की विशिष्ट रचनायें	6.00
काका के कारतूस	12.00
काका का दरबार	15.00
हसंत बसंत	15.00
जय बोलो बेईमान की	5.00
यार सप्तक	12.00
काका शतक	15.00

अशोक चक्रधर

तमाशा	
अशोक चक्रधर क.	15.00
भोले भाले	15.00
	15.00

हुल्लड़ मुरादाबा...

हज़ाम की हजामत	15.00
हुल्लड़ के कहकहे	15.00
हुल्लड़ मुरादाबादी की श्रेष्ठ हास्य व्यंग्य रचनाएं	15.00
हुल्लड़ के जोक्स	10.00

जोक्स सीरीज

तबस्सुम ही तबस्सुम	20.00
तेनाली राम की सूझबूझ	12.00
पार्टी जोक्स	10.00
शेखचिल्ली के लतीफे	12.00
टॉप जोक्स	10.00
हुल्लड़ के जोक्स	12.00
पति-पत्नी के जोक्स	10.00
माडर्न जोक्स	10.00
फिल्मी जोक्स	10.00
मिडनाइट जोक्स	10.00
चुटकले ही चुटकले	8.00
...मी प्रेमिकाओं के जोक्स	10.00
अकबर बीरबल विनोद	12.00
हास परिहास	12.00

उर्दू हिन्दी शायरी सीरीज

दीवाने गालिब	15.00
पंकज उदास की गजलें	12.00
अनूप जलोटा के भजन और गजलें	12.00
गुलाम अली की गजलें	10.00
जगजीत चित्रा की गजलें	12.00
मेहदी हसन की गजलें	12.00
उर्दू की आधुनिक गजलें	10.00
हिंदी की सर्वश्रेष्ठ गजलें	6.00
उर्दू के उस्ताद शायरों की गजलें	10.00
उर्दू के बेहतरीन शेर (शराब और शबाव)	10.00
उर्दू की बेहतरीन नज्में	5.00
हिन्दी की रुबाइयां और मुक्तक	5.00
तुम्हें मेरी कसम	6.00
आजादी के तराने	10.00
उर्दू की त्रेहतरीन रुबाइयां	5.00

स्वेट मार्डेन

आत्म विश्वास की पूंजी	12.00
सफलता की कुंजी	12.00
अवसर बीता जाये	12.00
अपने आपको पहचानिये	12.00
आगे बढ़ो	12.00
सफलता के सोपान	12.00
चिंता छोड़ो सुख से जियो	12.00
हंसते-हंसते कैसे जियें	12.00
आप क्या नहीं कर सकते	12.00
सफलता का रहस्य	12.00
जीवन और व्यवहार	12.00
विकास का पथ	12.00
उन्नति की राहें	12.00

कुछ और उपयोगी पुस्तकें

विज्ञान प्रश्नोत्तरी	20.00
इतिहास प्रश्नोत्तरी	20.00
...प्रश्नोत्तरी	20.00
डायम... साधन	15.00
30 दिन में अं...	10.00
हिन्दी इंगलिश बोल और सिद्धि	15.00
हिन्दी इंगलिश टीचर	10.00
मनोकामना सिद्धि	00
डायमंड नालिज गाइड	10.
सार्थक और सुखी बुढ़ापे की ओर	6.00
घरेलू बागवानी	12.00
अमृत वाणी	6.00
फर्स्ट एड	15.00
पंचतंत्र	12.00
हितोदेश	12.00
हिप्नोटिज्म	10.00
क्रोध और अहंकार से कैसे बचें	6.00
शराब, सिगरेट, बीड़ी कैसे छोड़ें	12.00
प्रेमपत्र	12.00
पहेलियां ही पहेलियां	12.00
सिंहासन बत्तीसी	10.00
घाघ और भड्डरी की कहावतें	10.00
जातक कथाएं-I	10.00
जातक कथाएं-II	

डायमण्ड पाकेट बुक्स प्रा. लि.
2715, दरियागंज, नई दिल्ली-110002